8

गलतानमता कब आवैगा...

गलता नमता कब आवैगा ...
राग–दोष परिणति मिट जैहै,
तब जियरा सुख पावैगा।। गलता.।। टेक।।

मैं ही ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मैं, तीनों भेद मिटावैगा।
करता किरिया करम भेद मिटि,
एक दरवलौं लावैगा।। गलता.।।१।।

निहचैं अमल मलिन व्योहारी, दोनों पक्ष नसावैगा।
भेद गुण गुणी को नहिं ह्वै है,
गुरु शीख कौन कहावैगा।। गलता. ।।२।।

'द्यानत' साधक साधि एक करि, दुविधा दूर बहावैगा।
वचन भेद कहवत सब मिटकै,
ज्यों का त्यों ठहरावैगा।। गलता.।।३।।

हे आत्मन्! पूरण–गलन के स्वभाव रूप इस पौद्गलिक तथा नश्वर देह से दृष्टि हटाकर तू कब अपने शुद्ध स्वरूप में आवेगा। जब तेरे राग–द्वेष दोनों ही दूर हो जायेंगे तब ही तू अपने आनंदस्वरूप को प्राप्त करेगा।।टेक।।

मैं ही ज्ञाता हूँ, मैं ही ज्ञान हूँ, मैं ही ज्ञेय हूँ तथा मैं ही अपने स्वभाव भावों का कर्ता हूँ, मैं ही क्रिया हूँ और मैं ही कार्य हूँ, इन सभी गुण–पर्याय भेदों से दृष्टि हटाकर मैं एक अभेद आत्मद्रव्य हूँ, जब ऐसी दृष्टि करेगा तब ही सुख प्राप्त होगा।।१।।

निश्चय से तो मैं अविकारी हूँ तथा व्यवहार से विकार सहित देखा जाता हूँ, इस प्रकार जब इन दोनों पक्षों से दृष्टि हटायेंगे तब गुण–गुणी का भेद भी समाप्त हो जायेगा और तू परमानन्द को प्राप्त करेगा, तब वहाँ गुरु–शिष्य का भेद भी समाप्त हो जायेगा।।२।।

कविवर द्यानतरायजी कहते हैं कि मैं कब अपने निश्चय स्वरूप में अर्थात् साधक और साध्य के भेद को मिटाकर, एक होकर इस दुविधा को दूर करूँगा। वचन से कही जाने वाली भिन्न–भिन्न बातों को आत्मसात कर कब मैं अपने शुद्ध स्वरूप में, जैसा है उसी रूप में स्थिर होऊँगा।।३।।